ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 | Issue 11 | Feb 2018

समकालीन हिंदी पद्य साहित्य विवेचन

SPECIAL ISSUE NO. 2

संपादक

डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे

2017 - 2018

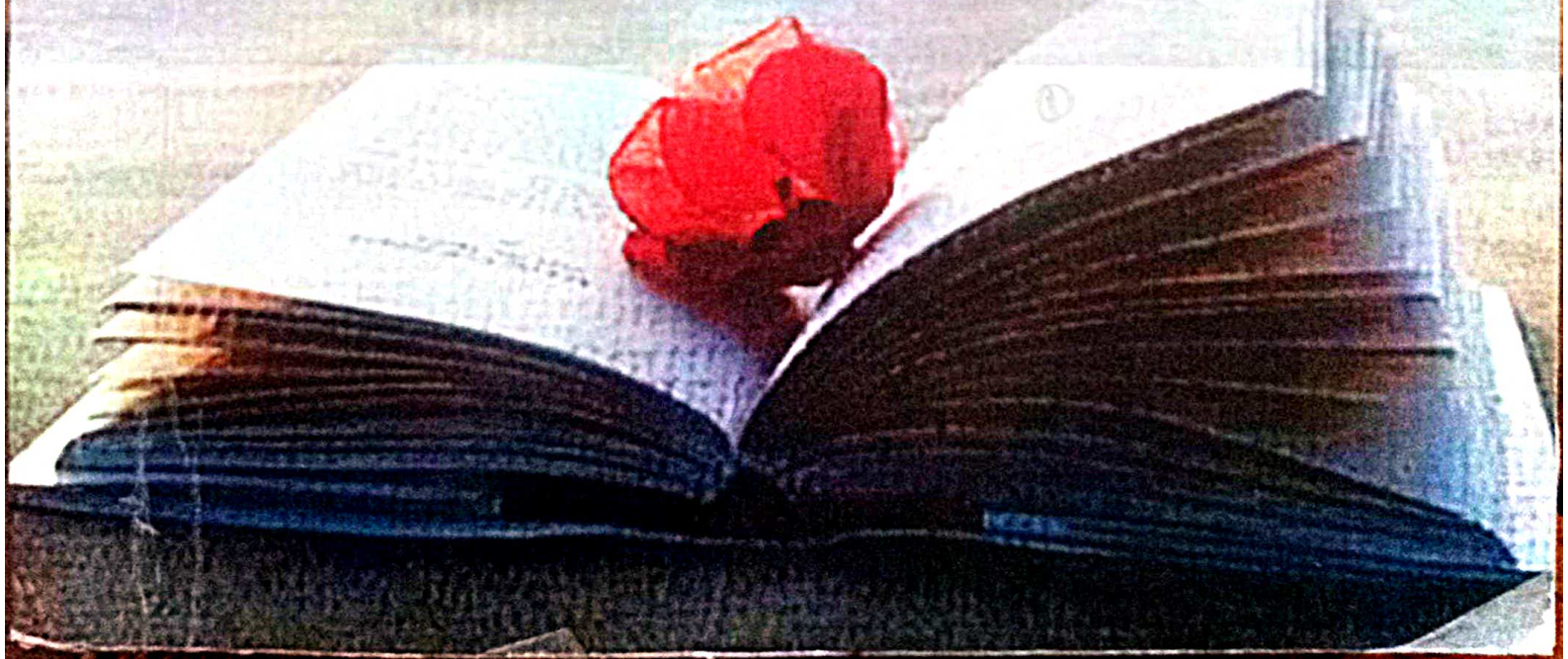

समकालीन हिन्दी कविता

डॉ. वडचकर. एस. ए.

246-251

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE

VISHWABHARATI

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 246-251
Paper received: 01 Feb 2018.
Paper accepted: 16 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

समकालीन हिन्दी कविता

डॉ. वडचकर. एस. ए.

हिन्दी की आधुनिक कविता नई कविता के पश्चात समकालीन कविता की ओर मुडती नजर आती है। यह हिन्दी कविता का एक नवीनतम आयाम है, जो अद्यतन जारी है । नई कविता के बाद भी काव्य क्षेत्र में नई समस्याएँ विद्यमान है। इसमें संम्भावनाएँ और समस्याएँ दोनों एक दुसरे पर हावी होने की चेष्टा करती है। समकालीन कविता एक वैचारिक क्रांतिका दर्शन है, जो भारतीय समाज में व्याप्त सभी प्रकार के अन्धविश्वासों, मान्यताओं, परम्परांओ व रिती-रिवाजों का पोषण करनेवाले धर्म ग्रंथो का केवल विश्लेषण ही नही बल्की भारतीय समाज में व्याप्त सभी प्रकार की असमानताओं का दर्शन हैं। समकालीन कविता अपने समय की पहचान है। यह कविता अपने समय के अन्त विरोधों की कविता है। इसमें आज के संघर्ष करते आदमी की सच्ची तस्वीर है। समकालीन कविता जो है उसका प्रसारण है। जिसे पढ़कर वर्तमान काल का बोध होता है! उसमे जीते, संघर्ष करते, लड़ते, तड़पते, गरजते, ठोकर खाकर सोचते वास्तविक आदमी की पहचान है।

समकालीन कविता में कवि अज्ञेय जी की कविता साँप के प्रति यह व्यंग्यात्मक भावसे मानवीय प्रवृत्तीवर रोशनी डालती है। आज महानगरों का वातावरण दिन-ब-दिन दुषित बनता जा रहा नजर आने लगा है। बढ़ती आबादी, बेरोजगारी गरीबी में सामान्य जनता पीसने लगी है। न रहने के लिए मकान है, न फुटपाथपर जगह, न

डॉ. वडचकर. एस. ए. : कै. रमेश वरपूडकर महाविद्यालय, सोनपेठ

शुध्द हवा है, न पानी उत्पन्न कम और खर्चा ज्यादा है। जैसे तैसे गुजारनेवाला समाज बुराई से अनैतिकता से प्राप्त पैसों की तरफ बढ़ने लगा है। साँप को संबोधित करते हुए कवि महानगरिय व्यवस्था से कवि पूछता है–

साँप,

तुम सभ्यतो हुए नहीं

नगर में बसना भी

तुम्हे नहीं आया! – अज्ञेय

इस कविता में कवि अज्ञेयजी शहरी आदमी की आदत बडप्पन जताने के लिए अपना सामर्थ्य प्रस्थापित करने के लिए दुसरे आदमी मी जान ले लेता है। स्वार्थी आदमी के व्यवहार को बताने की कोशिश की है।

कवि ओमप्रकाश वाल्मिकि की मश्रेष्ठफनामक कविता यथार्थ के गहरे भावबोध के साथ सामाजिक शोषण के आक्रोश जनित गम्भीर अभिव्यक्ती का लेखा जोखा है। यह कविता सामाजिक शोषण के विविध आयामों से टकराती है। मनुवादी व्यवस्था के सामने खुलकर प्रश्न उपस्थित करती है। जिस मनुवादी व्यवस्था ने मनुष्य को मनुष्य का हक नही दिया था। मनुवादी व्यवस्था ने कर्म को श्रेष्ठ न मानकर वर्ण को श्रेष्ठ मानकर मनुष्य को जानवर से भी बढ़कर जुल्म ढाले है। उस वर्णवादी व्यवस्था के खिलाफ जंग लडाने के लिए पूरी ताकद के साथ हमे खड़ा करती है।

एक रोज मैने भीं

जुटायी हिम्मत

और पूछलिया उससे

वही सवाल

देखा उसने मेरी ओर

बोला,

मै जन्मा हूँ ब्रम्हा के मुख से – ओकप्रकाश इसलिए श्रेष्ठ हूँ – ओमप्रकाश वाल्मीकि ने युगों, युगों से प्रताड़ित शोषित, वंचित मानव को चेतना का हथियार बनाया है। वर्ण व्यवस्था और जातिवाद से उपजे अवसाद ने कविता में सामाजिक विद्रोह का रूप धारण कर लिया है। ईश्वर धर्म सभ्यता, संस्कृती विषयक पूर्ण

विश्वास, निष्ठा तथा आस्था को कवि बुरी तरह से कुचलता है। उसे ईश्वर धर्म के नामपर चलाए जा रहे पाखण्डो से नफरत है।

स्वीकार्य नहीं मुझे
जाना / मृत्यु के बाद
तुम्हारे स्वर्ग में वहाँ भी तुम,
पहचानोगें मुझे
मेरी जाति से ही । ओमप्रकाश वाल्मीकि

यहाँ समाज में जुल्म है, पीडित है पूँजी का नग्न नृशंस नत्य है, शोषण है! आज हमारी व्यवस्था, प्रजातांत्रिक व्यवस्था भ्रष्टाचार के आकंठ में डूबी है। ऊपर के लोग सबकुछ हड़पले रहे है। पर वे नीचे वालों की नजरों से बच नहीं पाते । मजदूर सचेत लोगों को सब कुछ मालूम है। वे सभी जानते है कि उनके शोषण का दुसरा तरीका आजमाया जाने लगा है। अब वे सचेत हो गए है – तब उन्हे लगता है, यहाँ तो सच बोलना गलत है। आज सत्य बोलना काई मायने नही रखता सर्वत्र असत्य का बोल बाला है। यहाँ राजनीतिज्ञ के असली चेहरों को पहचानकर उनकी कारगुजारियों को बेनकाबकर पूँजिवादी व्यवस्था की पोल खोलकर आदमखोर, पूँजीवादी व्यवस्था, गुण्डों, हत्यारों एवं असामाजिक तत्वों को पनाह देकर देश में अशांति फैलाकर स्वार्थ साधनेवालोंकों वक्रता से देखा है। कवि नागार्जून की कविता महजार हजार बाहोंवालीफकाव्यसंग्रह से मसच ना बोलनाफकविता सच्चाई की नंगी तस्वीर है। सत्य बोलना पाप पुण्य है, और झुठ बोलना पाप है ऐसा कहा जाता था किंतु आज सत्य बोलना पाप है और –ुठ बोलना पुण्य है ऐसा कहना उचित होगा। यहाँ प्रजा विचित्र है मलबारों में रहनेवालों के पास अन्न बहुत है, उन्हे हजम होता नहीं है, किंतु खेतिहार के पास वक्त की पेट की आग बुझाने के लिए अन्न नहीं है। समाज में अनाचारी वृत्ती फैली है डाकू गुण्डे खुले आम हत्यार ले कर फिरते है, उनके खिलाफ बोलने की किसी में हिम्मत नहीं है, जो हिम्मत करेगा उसकी जेल पक्की हो जाती है। नागार्जुन की कविता में हमे देखने मिलता है।

सपने में भी सच न बोलना वर्ना पकडे जाओगे,
भैय्या, लखनऊ–दिल्ली पहुँचो, मेवा–मिसरी पाओगे।
माल मिलेगा, रेत सको यदि गला, मजूर–किसान का

हम मर-भुक्खों से क्या होगा, चरण नागार्जुन गहो श्रीमानों का।

कवि सजग नागरिक की तरह अपने देश काल की स्थितियों के प्रति संवेदनशील होता है। वह आवश्यकतानुसार उनस्थितियों का विवेचन, विश्लेषण और मुल्यांकन करता है। मुल्यांकन की प्रक्रिया में उसकी समाज संवेदना, संवेदनात्मक –ज्ञान में परिणत होकर सर्जनात्मक – कल्पना के स्वरूप प्रदान करती है। यह वैयक्तिकता से अधिक सामाजिक एवं सामुहिक चेतना निराशा, अवसाद, क्रुरता, हिंसा आदि से गहरा सरोकार रखती है। कवि अरूण कमलने मअपनी केवलधारफ सबूत और नये इलाकेमे एन्द्रिक चाक्षूष कुछ यों बयान किया है।

यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे बसंत का गया पत–झड़ को लौटा हूँ
जैसे वैशाख का गया भादों को लौटा हूँ

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

एक ही कविता में षड्ऋतु और अनेक महीनों को याद किया है, यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं प्राकृतिक परिवर्तन है या वैश्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण, बाजारीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति की माँग है इसे क्या माने। आधुनिकता ने हमें इतना व्यस्त कर दिया है कि हमारे पास इतना भी समय नहीं है कि हम प्रकृति को निहार सके और उसके अनावृत सौंदर्य को अपने भीतर उतार सके। आज उत्तर आधुनिकता, वैश्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण एवं बाजारीकरण ने बहूत कुछ बदल चुका है। इसलिए लोंग दिखावे एवं नखरे करने लगते है। पर्वत के समान महँगाई के कारण सामान्य जीवन अस्त व्यस्त हुआ है। रहजनी, लुटपाट, हत्या धोखाधड़ी एवं चारसौ बीसी बढ़ने लगी है! पारिवारीक सामाजिक राजनैतिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर भी फरेब बढ़ा है । धीरे–धीरे लोग संवेदना शुन्य हो रहे है। नैतिक मुल्यों का ह्रास होने लगा है, लोग एक दुसरे की अर्थी उठाने में भी डरते है। जनसंख्या वृध्दि तो हुई परन्तु जिस तरह से औद्योगिक एवं तकनीकी विकास होना चाहिए था, नहीं हुआ लोग एक दुसरे के खुन के प्यासे बनते नजर आ रहे है। मुक्तीबोध, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय एवं धुमिल आदि ने इस प्रवृत्तीका खुलकर विरोध किया है। सामाजिक एवं राजनैतिक कु

चक्र से लड़ता आम आदमी । विषमता और कुचक्रों की दीवारों पर चोट करने के साथ-साथ आडे आई दीवार को तोडने के लिए भी जनता तैयार है।

देश तो कर्ज में डूब ही गया है
बन्धक पूरी परजा को रख हीं तो गया है।
कर्जल्यों सूदभरों, महाजन वफादर है,
जब मांगों उधार है सुक्ष्म है वो पाएगा
बाकी भूखों मर जायेगा

– भीड सतह में चलनेलगी – रमणिका गुप्ता महँगाई के साथ ही बेकारी बढ़ गई है। उसका चित्रण भी यहाँ हुआ है। मजदुरों की रोटी, कपडा, आवास की समस्या अधिकाधिक तीव्र हो गई और वेतन कुछ भी नहीं । मजदुर किसान या तो कर्ज में डूबकर मर जाता है या उसके श्रम की किमत केवल भूख ही नहीं याच नाही नही, एक भागीदारी भी है यही उसका अधिकार भी है। आम आदमी की व्यथा विवशता और घुटन भरी जिन्दगी के अंधेरे में कवयित्री रमणिका गुप्ता चेतावनी देती है।

महंगाई के घोडे पर चढके, दाम हवा से बातें करतें
वेतन के गदहे पे चढ़के, पकड नहीं हम उनको सकते
बाँध के काछा बढ़के आगे, चल रास था मले,
चल हाथ टानले, चल हला बोले, चल हमला बोल।

रमणिका गुप्ताने आम आदमी की पीड़ा का चित्रण बड़ी सशक्तता के साथ किया है। शोषण करनेवालों के प्रति घृणा प्रदर्शीत कर, मार्क्सवादी ढंग की क्रांतिद्वारा शोषण रहित साम्यवादी समाज की रचना का संकल्प करती है! समकालीन कविता का परिदृश्य बहुत ही व्यापक है। हालाँकि समकालिनता अपने आप में संशिलष्ट है। यह कविता वस्तु जगत में कई दृष्टियों से भिन्न है। समाज की हर एक गतिविधि के प्रति पूरी सचेत है। यह कविता केवल स्थायी भावों को रसात्मक रूप में व्यक्त नहीं करती बल्कि मनुष्य के जागतिक व्यवहार एवं युग की समग्र चेतना को व्यक्त करती है। यह कविता मानसिक उध्देल, नया यथार्थ की सहज प्रस्तुति तक भी सीमित नहीं है। वह उन शक्तीयों के विरूध्द जु-ारू भूमिका का निर्वाह करती है, जो

मनुष्यता के लिए संकट समान है। यह कविता आम आदमी के लिए वरदान है, उसकी मुसीबत के विरूध्द एक हथियार है। वह अपने सरोकरों और काव्य भाषा को बनाये रखने का नाम है। इसमें आम आदमी की संवेदना की अभिव्यक्ती है। समकालिन कविता अपने समय की पहचान है। यह अपने समय के अन्तविरोधों की कविता है। सारत: – समकालीन कविता आम आदमी के जीवन के संघर्षो, विसंगतियों, विषमताओं एवं विद्रुपताओं की खुली पहचान है। अंधेरे में दाम न थामनेवालों सामाजिक परिस्थितियों की कुरूपताओं और अन्तविरोधों के बीच छटपटाते आदमी की मानवीय धरातल पर रोशनी की तलाश है। अर्थात आम आदमी का संसार है। जब तक कोई व्यापक परिवर्तन समाज में नहीं होता तब तक समकालीन कविता का युग ही माना जायेगा।

संदर्भ ग्रंथ

१) साहित्य भारती – संकलन

२) समृध्द काव्य – संकलन

३) संचारिका मासिक पत्रिका

४) साहित्य अमृत मासिक पत्रिका

५) आलोचना त्रैमासिक

६) डॉ. रश्मि चतुर्वेदी – हिन्दी दलित साहित्य की विविध विधाएँ

७) डॉ. बिमलेश – हिन्दी साहित्य के विविध आयाम

८) डॉ. सरोज पगारे – हिन्दी दलित साहित्य आन्दोलन

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

संपादक
डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE
www.vishwabharati.in

ISSN 2320-6263

ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893